Shodh ManthanVol. XVII Special Issue Jan.2026 ISSN: (P)0976-5255(e)2454-339X, Impact Factor 8.889 (SJIF)
https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17SI01.11

रमणिका गुप्ता के साहित्य में स्त्री विमर्श की अवधारणा

11

सरोज कविता
शोधार्थी (हिन्दी विभाग)
गोकुलदास हिंदू गर्ल्स कॉलेज, मुरादाबाद, उ.प्र.
एम. जे. पी. रुहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली, उ.प्र.

डॉ. सुधा सिंह
शोध निर्देशिका (हिन्दी विभाग)
गोकुलदास हिंदू गर्ल्स कॉलेज, मुरादाबाद, उ.प्र.
एम. जे. पी. रुहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली, उ.प्र.

समाज एक परिवर्तनशील प्रक्रिया का हिस्सा है। जिसकी पहली शर्त है निरंतर प्रगृति के पथ पर अग्रसर रहना। आज का एक बहुत अहम और दिलचस्प विषय है स्त्री की अवधारणा। इस अवधारणा के कई मापदण्ड है, जो विभिन्न पहलूओं को उजागर करते है। महिलाओं का सशाक्ति करण, लिंग आधारित असमानताएँ ,उनकी शिक्षा यौन हिसाओं का शिकार होती महिलाएं स्त्रियों से संबधित समाज में बदलते मापदण्य आदि ऐसे कई दृष्टिकोण है तथा कई विभिन्न कार्यक्षेत्र है जिन्हे उजागर करने की आवश्यकता है।

भारतीय समाज में महिलाओं की गाति उनकी बदलती तस्वीर 19 वीं शताब्दी से 21वीं सदी तक के वर्तमान तक प्रगृति के पथ पर अग्रसर रहीं है। महिलाएं समाज के आधी आबादी का प्रतिनिधित्व करती हैं। यहीं कारण रहा है कि समाज की गातिशीलता का मापन स्त्रियों की शिक्षा एंव उनके आर्थिक सामाजिक ,राजनीतिक परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखकर किया जाता है। बदलते समाज में स्त्री की स्थिति पहले से बेहतर हुई हैं, लेकिन यह बदलाव अभी अधूरा है।

समाज में घटित–घटनाओं को पन्नों में उसका उल्लेख करना साहित्य कहलाता है। मन की व्यथा उलझे हुए प्रश्नों के उत्तर, मापन इतिहास की सर्वव्याख्या साहित्य के दायरें मे आती है। हर आन्दोलन का विचार–विमर्श को कलम की क्रांति की तरफ मोडा गया। स्त्री विमर्श की चिंगाारी को दहकते आग का रूप हिन्दी साहित्य ने दिया है। हिन्दी साहित्य में 19वीं शताब्दी आते–आते स्त्री विमर्श ने अपना पदार्पण किया । फिर क्या था साहित्य के क्षेत्र में कलम की क्रांति हुई, जिसने सादियों से हीन और कमजोर समझी जानेवाली समुदाय को अपने बदलाव के लिए प्रेरित किया। इसकी शुरूआती राजाराममोहन राय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, सरला देवी आदि महान विभूतियों ने किया। 20वीं सदी तक आते– आते महिला लेखिकाओं ने कमान संभाली, जिसमें महादेवी वर्मा, कृष्णा सोबती, अमृत प्रियतम, मन्नु भंडारी, नासिरा शर्मा प्रभा खेतान, ममता कालिया, उषा प्रियवदा, मैत्री पुष्पा और रमणिका गुप्ता आदि लेखिकाओं ने किया।
समकालीन हिन्दी साहित्य की सबसे सशक्त लेखिका मानी जाती है रमणिका गुप्ता। इन्होने अपनी लेखनी में कल्पना को नकारते हुए यथार्थ की भाषा पर बल दिया है। आपके साहित्य में समाज की सोच, संवेदना और बदलाव की गहराई दिखाई देती है। यह स्त्री पंरपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन खोजती नजर आती है। लेखिका सम्पूर्ण जीवन स्त्री विमर्श के केन्द्र की परिधि में ही गुमते हुए नजर आती है। गुप्ताजी की कलम दलित एवं आदिवासी विमर्श का साहित्य बना। पिछड़े और मजदूर वर्ग की हक की लडाई–लड़ते वह साहित्य के मैदान मे उतरी और स्वयं द्वारा किये गये आंदोलनों को कलमबद्ध करके सदा के लिए इतिहास के पन्नों में दर्ज करा गयीं। रमणिका जी का साहित्य समकालिन लेखक–लेखिकाओं के लिए प्रेरणा का स्त्रोत बना, हजारों शोधार्थियों की जिसका केन्द्र बना स्त्री विमर्श की हर पहलूओं पर आपकी पैनी दृष्टि गई। शोषित मजदूर, वंचित और हाशिया पर रहीं। दलित और आदिवासी महिलाएं अपने व्याक्तित्व की खोज में संघर्षशील रहीं। रमणिका गुप्ता का हिन्दी साहित्य में सबसे बड़ा योगदान उनके द्वारा लिखित पुस्तकें और आलेख रहें। जिसमें उन्होने चुप रहने कि बजाये शोषण के खिलाफ सवाल करती नजर आती। अपने अधिकारों को पहचाने की उनके लिए लड़ने के लिए प्रेरित करती है। लेखिका के लेख सभी विषयों की समस्याओं को छूते नजर आते है। आर्थिक क्षेत्रों के कोयला खदानों में काम करती आदिवासी महिलाएं, अपने वजुद से अनजान मजदूर वर्ग जिनके साथ कदम– से कदम मिलाकार लेखिका साहित्य और मानवता के लिए एक मिसाल बनीं। उनके दूःखों को अपनी समस्याँ समझी, उन्हें जूझते देख अपनी बैचेनी समझी, उन्हें जूझते देखा अपनी बेचैनी समझी जिसका समाधन रमणिका जी ने कोयला खदानों में उतरकर किया।

रमणिका जी का साहित्य बहुत व्यापक और विस्तृत है। बस एक कहानी संग्रह **'बहू जुठाई'** की रचना करके ही उन्होंने हिन्दी साहित्य में ख्याति अर्जित की। इस कहानी संग्रह में दलित तथा आदिवासी महिलाओं को केन्द्र में रखकर इस पुस्तक को अंजाम दिया है। इस कहानी संग्रह में जितने भी पात्रों को चरित्र–चित्रण किया गया है। सब यथार्थ के धरातल से सम्बन्धित है। चाहे वह **चमेली** हो या **परबतिया, प्यारी जिरवा, चन्दा** आदि सब सशक्त नायिकाएं हैं जिन्होंने असल जिंदगी में योद्धा की भूमिका निभाई, कभी कोयलांचल में अपने अधिकार के लिए तो कभी समाज में खुद को पशुत्व व्यवहार के विरोध में तो कभी आर्थिक तंगी की मार झेलते

हुए स्वयं को स्वावलम्बन बनाने के लिए संघर्ष किया है। कहानी के परिचय में लेखिका **रोहिणी अग्रवाल** लिखती हैं कि– **"ये कहानियाँ हर प्रकार के स्खलन से बच कर स्त्री के मानव–मुक्ति आंदोलन को रचनात्मक आधार देना चाहती है; यदि कारण यही कारण है कि जिरवा जैसी तेज–तर्रार मर्द विरोधी स्त्रियाँ तब तक छनी और छिली जाती रहती है, जब तक वे कितने को सामाजिक प्रतिबद्धता, आवेश को विवेक और हिंसा को आंदोलन में तब्दील करने मूलमंत्र नहीं जानती है।"**

रमणिका जी की कहानियाँ अत्यंत संवेदनशील कहानियाँ है जो बहुत ही मार्मिक ढंग से व्यक्त की गई है।

रमणिका गुप्ता जी ने दो उपन्यासों की रचना की है। **मौसी** और **सीता** यह दो पात्र लेखिका के जीवन में सजीव पात्र है। जिन्हें लेकर लेखिका ने उपन्यास की रचना कि उन उपन्यासों की भाषा सरल, स्पष्ट धारदार है, शैली तथ्यात्मक और विद्रोही है। इनकी रचनाएँ पाठक को सोचने और व्यवस्था पर सवाल उठाने को विवश करती है। रमणिका जी ने बड़े ही निर्भीकता से रचनाओं में सत्य को उजागर किया है। अपने उपन्यास की भूमिका में लेखिका लिखतीं हैं– **"अपनी अस्मिता बचाने हेतु स्त्रियाँ– विशेषकर आदिवासी स्त्रियाँ जोखिम पर जोखिम उठाकर जूझ रहीं थीं। कहीं व्यक्तिगत स्तर पर तो कहीं सामूहिक स्तर पर या संगठन के माध्यम से तो कहीं अपनी नियति मानकर सह रही थीं।"**

रमणिका गुप्ता को स्त्री की जटिलताओं की गहरी समझ थीं। इसका सबसे महत्वपूर्ण कारण रहा है लेखिका का अपना पारिवारिक परिवेश जिसमें स्वयं लेखिका सामंतवादी सोच से जूझ रहीं थीं। **'हादसे'** और **'आपहुदरी'** आत्मकथा में लेखिका ने अपने जीवन से सम्बन्धित अत्यधिक संवेदनशील मार्मिक प्रसंगों को व्यक्त किया है। आत्मकथा लिखने की पहली शर्त होती है–निर्भीक, निडर, बेबाक, बेझिझक और बिन्दास जो अपने जीवन में घटित घटनाओं को बेबाकी से पन्नों में उतार सके और यह सारी खूबी हिन्दी साहित्य की उम्दा लेखिकाओं में विख्यात रमणिका गुप्ता जी में थीं। 'आपहुदरी' आत्मकथा में लेखिका ने पारिवारिक प्रसंगों को व्यक्त किया है और 'हादसे' में अपने जीवन के राजनीतिक क्षेत्रों के अनुभवों को उजागर किया है।

रमणिका गुप्ता का व्यक्तिगत बहुआयामी था। हिन्दी साहित्य से इनका अधिक लगाव था। प्रसिद्ध आलोचक **डॉ0 रामविलास शर्मा** जी ने सुझाव पर लिखना प्रारम्भ किया था–**"कविता लिखती हो, लिखती रहो, लेकिन तुम अपने अनुभव, कहानियों में दर्ज करो। भले वर्णनात्मक ही लिखो, वह बहुत महत्वपूर्ण होगा। वह दस्तावेज होगा, इतिहास होगा इस युग का यह शोध के लिए कच्चा माल भी बनेगा। तुम नहीं तो कोई और इनका उपयोग करेगा।"**

शोषण के विरुद्ध प्रतिरोध की भावना रमणिका जी में पहले से ही विद्यमान थीं। बस समय के अनुसार वह लेखनी में उतरी। रमणिका गुप्ता आदिवासी समस्या पर केन्द्रित है। बिहार, झारखण्ड के कोयलांचल क्षेत्र में रहते हुए आदिवासी संस्कृति व परम्परा में रमणिका जी पूरी तरह से रच–बस गईं थीं। अपने आलेख पुस्तक में **स्त्री–मुक्ति : संघर्ष और इतिहास** में एक लेख में वह लिखती हैं– **"आदिवासी में तो पुरुष कोही वधू के लिए कन्या शुल्क की राशि देनी पड़ती है, तभी उसकी शादी हो सकती है। इसे झारखंड में (पौनप्रथा) कहते हैं। वर पक्ष, वधू पक्ष को धन देता है और विदाई के समय लड़की के भाई को एक बैल भी देना पड़ता है।"**

इस प्रकार रमणिका जी के सम्पूर्ण रचना संसार में आदिवासी संस्कृति की झलक देखने को मिलती है, जो सामाजिकता के साथ–साथ स्त्रियों की समस्या के हर पहलुओं को पाठकों के सामने उजागर किया है। लेखिका का रचना संसार सदैव ही समाज को दर्पण दिखाने का काम करेगा एवं साहित्य के शोधार्थी को मार्गदर्शन यथार्थपूर्ण तथा तर्कशील दृष्टि प्रदान करता रहेगा।

संदर्भ

1. स्त्री मुक्ति संघर्ष और इतिहास– रमणिका गुप्ता, पृ0सं0–158
2. बहु–जुठाई, कहानी संग्रह– रमणिका गुप्ता
3. सीता मौसी, उपन्यास–रमणिका गुप्ता
4. 'आपहुदरी' आत्मकथा– रमणिका गुप्ता
5. www.website.com
6. 'आपहुदरी'– आत्मकथा– रमणिका गुप्ता, समसामायिक प्रकाषन, संस्करण–16, पृ0सं0–85
7. https://sahitysarijan.com